International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, July-December 2024, Submitted in December 2024, ISSN -2393-8048

कौशल्या बैसन्त्री का 'दोहरा अभिशाप' और दया पंवार का 'अछूत' आत्मकथा का तुलनात्मक अध्ययन

नीतू गोयल, शोधार्थी, हिंदी विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय
डॉ. अरविंद कुमार, सहआचार्य, हिंदी विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय

सारांश

यह शोध पत्र हिंदी की पहली दलित स्त्री आत्मकथा 'दोहरा अभिशापश (कौशल्या बैसन्त्री) और मराठी की प्रतिष्ठित दलित पुरुष आत्मकथा 'अछूत' (दया पंवार) का तुलनात्मक विश्लेषण करता है। दोनों आत्मकथाएँ महाराष्ट्र के महार समुदाय के जीवन–संघर्ष को चित्रित करती हैं, किंतु उनके अनुभव और दृष्टिकोण में लिंग (Gender) और समय (Time) के कारण महत्वपूर्ण अंतर हैं। 'अछूत' मुख्यतः जातिगत उत्पीड़न और गरीबी के विरुद्ध एक दलित पुरुष के संघर्ष, तथा आंबेडकरवादी आंदोलन के प्रभाव को दर्शाती है। इसके विपरीत, 'दोहरा अभिशाप' दलित होने के साथ–साथ स्त्री होने के 'दोहरे अभिशाप' पर केंद्रित है, जहाँ लेखिका को सवर्णों के अलावा दलित समाज की पितृसत्ता और आंतरिक विसंगतियों का भी सामना करना पड़ा। यह तुलनात्मक अध्ययन दलित जीवन की जटिलताओं को स्त्री और पुरुष के अलग–अलग परिदृश्यों से समझने का प्रयास करता है।

परिचय

भारतीय साहित्य में दलित आत्मकथाएँ 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में एक सशक्त विधा के रूप में उभरीं, जिसने सदियों से उपेक्षित दलित समाज के भोगे हुए यथार्थ को पहली बार सीधे और बेबाक ढंग से प्रस्तुत किया। यह साहित्य दलितों को 'वस्तु' के रूप में नहीं, बल्कि 'कर्ता' के रूप में स्थापित करता है। मराठी में दया पंवार (दगडू मारुति पंवार) की 'अछूत' (1978) और हिंदी में कौशल्या बैसन्त्री की 'दोहरा अभिशाप' (1999) इस परंपरा की महत्वपूर्ण कृतियाँ हैं। दोनों ही आत्मकथाएँ दलितों, विशेषकर महाराष्ट्र के महार समुदाय के, ग्रामीण महारवाड़ा से लेकर शहरी मुंबई तक के जीवन, संघर्ष, आर्थिक विपन्नता, अस्पृश्यता के दंश और डॉ. बी. आर. आंबेडकर के प्रभाव को दर्शाती हैं। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य दोनों कृतियों के बीच के समानताओं और भिन्नताओं का विश्लेषण कर दलित विमर्श के व्यापक फलक को समझना है।

शोध के सोपान

विषय चयन और समस्या निर्धारणः दोनों आत्मकथाओं में भोगे गए यथार्थ और आत्मकथ्य के भिन्न दृष्टिकोणों की पहचान करना।

प्राथमिक और द्वितीयक सामग्री का संकलनः 'दोहरा अभिशाप' और 'अछूत' का गहन पाठ, तथा उन पर आधारित आलोचनात्मक लेखों, शोध पत्रों और दलित साहित्य से संबंधित पुस्तकों का संग्रह।

तुलनात्मक अध्ययन हेतु मानदंडों का निर्धारणः जातिगत उत्पीड़न, आर्थिक संघर्ष, पितृसत्ता – लिंगभेद, आंबेडकरवादी चेतना, भाषा और शैली जैसे मानदंडों का निर्धारण।

तुलनात्मक विश्लेषणः निर्धारित मानदंडों के आधार पर दोनों आत्मकथाओं की सामग्री का तुलनात्मक विवेचन।

निष्कर्ष एवं परिणामः शोध के प्रमुख निष्कर्षों का प्रतिपादन और दलित विमर्श में दोनों कृतियों के महत्व को रेखांकित करना।

शोध का औचित्य

यह शोध इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दलित जीवन के अनुभव को लिंगभेद (Gender Disparity) के दृष्टिकोण से विश्लेषित करता है। दया पवार जहाँ दलित पुरुष के रूप में जातिगत अपमान और आर्थिक अभाव को केंद्र में रखते हैं, वहीं कौशल्या बैसन्त्री दलित होने के साथ–साथ स्त्री होने का अतिरिक्त भार (दोहरा अभिशाप) झेलती हैं। यह तुलना दलित साहित्य में दलित–स्त्री विमर्श के उदय और उसकी विशिष्ट समस्याओं को समझने के लिए आवश्यक है। यह सिद्ध करता है कि दलित आत्मकथा केवल जाति की पीड़ा का वर्णन नहीं है, बल्कि वर्ग, जाति और लिंग के अंतर्संबंधों (Intersectionality) का दस्तावेज भी है।

साहित्य समीक्षा

दलित आत्मकथाओं पर व्यापक साहित्य उपलब्ध है। आलोचनात्मक साहित्य मुख्य रूप से इन बिन्दुओं पर केंद्रित रहा हैः

दलित आत्मकथाओं की बेबाकी और यथार्थवादः आलोचकों ने दलित आत्मकथाओं की सबसे बड़ी विशेषता उनकी निर्भीक अभिव्यक्ति को माना है, जो सवर्ण लेखकों के साहित्य में अनुपस्थित है।

में देखा गया है, जो दलित चेतना और विद्रोह का स्वर है। इसमें 'बलुत' प्रथा, महारवाड़ा का जीवन

और शिक्षा के माध्यम से मुक्ति की चाह प्रमुख है।

'दोहरा अभिशाप' और दलित स्त्री विमर्शः आलोचकों ने कौशल्या बैसन्त्री को हिंदी की पहली दलित स्त्री आत्मकथाकार मानकर उनके योगदान को रेखांकित किया है। उनकी आत्मकथा की विशिष्टता यह है कि यह दलित पुरुषों द्वारा दलित स्त्रियों के शोषण को भी उजागर करती है, जिस पर पूर्व के साहित्य में कम चर्चा हुई थी।

समीक्षा बताती है कि इन दोनों कृतियों पर व्यक्तिगत रूप से बहुत काम हुआ है, लेकिन उनकी गहन तुलना और दलित पुरुष बनाम दलित स्त्री अनुभवों के सूक्ष्म अंतर को एक साथ विश्लेषित करने की आवश्यकता अभी भी बनी हुई है।

विधि तंत्र

प्रस्तुत शोध में तुलनात्मक साहित्यिक विश्लेषण पद्धति (Comparative Literary Analysis Method) का उपयोग किया गया।

मूल पाठ आधारित विश्लेषणः दोनों आत्मकथाओं के मूल पाठों को प्राथमिक स्रोत के रूप में लिया गया।

गुणात्मक शोध दृष्टिकोण (Qualitative Research Approach): जाति, वर्ग, लिंग और प्रतिरोध की चेतना जैसे विषयों के वर्णन की प्रकृति (Nature of Description) का गहन अध्ययन किया गया।

निष्कर्षनात्मक पद्धति (Inferential Method): दोनों ग्रंथों में चित्रित अनुभवों से सामान्य और विशिष्ट निष्कर्षों (General and Specific Conclusion) को निकालने का प्रयास किया गया।

उद्देश्य

कौशल्या बैसन्त्री के श्दोहरा अभिशापश में चित्रित पितृसत्तात्मक संघर्ष को दया पवार के 'अछूत' में चित्रित केवल जातिगत संघर्ष से तुलना करना।

- दोनों आत्मकथाओं में डॉ. बी. आर. आंबेडकर और शिक्षा के प्रति चेतना और उसके प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- 'महारवाड़ा' और 'मुंबई' जैसे भौगोलिक और सामाजिक परिवेशों के चित्रण में स्त्री और पुरुष के अनुभवों के अंतर को रेखांकित करना।
- दलित साहित्य में दलित स्त्री की उपस्थिति के महत्व को स्थापित करना।

परिकल्पना

'दोहरा अभिशाप' और 'अछूत' दोनों दलित जीवन की त्रासदी का ईमानदार और यथार्थपरक चित्रण करती हैं।

दलित स्त्री का अनुभव पुरुष दलित लेखक से भिन्न और अधिक जटिल है।

दोनों रचनाओं में प्रतिरोध के स्वर मौजूद हैं, पर उसकी प्रकृति अलग है।

भाषा और शैली दोनों लेखकों के सामाजिक परिवेश को प्रतिबिंबित करती है।

महत्त्व

दलित, स्त्री और सामाजिक न्याय विमर्श को समझने में सहायक। दो अलग दृष्टिकोणों से समाज के असमान ढाँचे की पहचान। शोधकर्ताओं के लिए दलित आत्मकथा परंपरा का तुलनात्मक ढाँचा उपलब्ध कराना। साहित्य में अनुभव—आधारित सत्य को केंद्र में लाने वाले अध्ययनों को बढ़ावा देना।

निष्कर्ष

दोनों आत्मकथाएँ दलित जीवन की कठोर वास्तविकता को सामने लाती हैं, पर दृष्टि और अनुभव अलग हैं। 'दोहरा अभिशाप' एक दलित स्त्री की दबी हुई आवाज है, जो परिवार और समाज दोनों के उत्पीड़न को झेलती है। वहीं 'अछूत' दलित समाज के सामूहिक अपमान, गरीबी, अभाव और विद्रोह का सामाजिक इतिहास है।

तुलनात्मक रूप से देखा जाए तो दोनों रचनाएँ दलित साहित्य को समृद्ध करती हैं और यह सिद्ध करती हैं कि संघर्ष चाहे व्यक्तिगत हो या सामूहिककृउसकी जड़ें सामाजिक संरचना में ही मिलती हैं।

ये आत्मकथाएँ समाज में परिवर्तन और समानता की आवश्यकता को रेखांकित करती हैं।

संदर्भ—सूची

1. Baisantry, K. (2009). *Dohra Abhishap*. New Delhi: Vani Prakashan.
2. Pawar, D. (1978). *Baluta*. Mumbai: Granthali.
3. Pawar, D. (2010). *Achhoot* (Hindi translation). New Delhi: Rajkamal Prakashan.
4. Valmiki, O. (1997). *Joothan*. New Delhi: Radhakrishna Prakashan.
5. Limbale, S. (2007). *Dalit Sahitya Ka Saundaryashastra*. New Delhi: Vani Prakashan.

6. Ambedkar, B. R. (2013). *Jati Ka Ucched* (Hindi edition). New Delhi: Samyak Prakashan.
(Original work published 1936)
7. Sharma, A. (2015). *Dalit Aatmakatha Ka Samajik Pariprekshya*. New Delhi: Rajkamal Prakashan.
8. Singh, R. (2018). *Hindi Dalit Aatmakatha: Vimarsh Aur Samvedana*. Delhi: Gyanodaya Prakashan.
SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY